काल अर आज रै बिचै

[कवितावां]

सावर दइया

धरती प्रकाशन
उदयरामसर (बीकानेर)

प्रकाशक — धरती प्रकाशन उदयरामसर
बीकानेर
संस्करण — जुलाई १९७७
मोल — १०) रुपया
मुद्रक — एजूकेशनल प्रेस बीकानेर

KAL AR AAJ RE BICCHE (Rajasthani Verse)
By Sánwar Daiya Price

हवालो

सुणो
अेक थान छोड'र सगळा न !

काल अर आज रै बिच्चै

काल
जद तू म्हारै सागै ही
हवा मे सुगन्ध मैंसूस हुया करती ही
हवा रा वदळना रुख
मोवणा लाग्या करता हा
नित नूवा अरथ
दिया करता हा मनै
पण आज
जद तू म्हारै सागै है
हवा री सुगन्ध
कोई अरथ कोनी देवै
इण रै वदळतै रुखा री
पिछाण गमगी है

काल
जद तू म्हारै सागै ही
म्हारी रुचि ही
रुता रै वदळाव मे
मैं चावतो
रुता रोज वदळै
पण आज
जद तू म्हारै सागै है
रुता रो बदळाव भी
अकारथ हुयग्यो
अबै रुता चावै
रोज बदळै, की फरक कोनी पडै

काल
जद तू म्हार साग हा
आभै रा बदळता रग
नू वा नू वा अरथ
दिया करता हा मन
मैं वा रगा रो
खुलासो जागतो हो
पण आज
जद तू म्हारै साग है
आभ रा बदळता रग
नू वा अरथ कोनी देव
आभो सि दूरी हुवै
या सलेटी
मन काळो ई लखावै

ओ म्हारी सागोतर !
काल अर आज र बिच्चै
आयोडो ओ बदळाव
अकारण कोनी

काल
जद तू म्हारै साग ही
थारै सू मिलताई
ताजगी बापर जाया करती ही
थारी सासा मे
सगीत अर सुगन्ध लखावती
सासा री आच
अर डील र मास र
अेडै छेडै ई घूम्या करता हा
हवा री सुगध
रूता रै बदळाव
अर आभै रै रगा रा अरथ

पण आज
जद तू म्हारै सागै है
थारो सागै हुवणो
तू वादो कोनी लखावै
अबै तू म्हारै घरा
चूल्है माथ रोट्या सेकै
थनै मा
अर मनै बापू कैयर
आगळी अपड लेवै
ना'हा कवळा हाथ
आपणै आगणै मे रमै
की तोतला सुर
मैं किया भूल जावू
म्हारै काधा माथै
कोई बोझो कोनी ?

तैल
लूण
अर लक्डी री
जुगत जोडण खातर
घर अर दफ्तर रै विच्चै
सिट्टल री गळाई घूमतो
मैं
बाकी बच्योडै वगत मे
की अलायदी सुविधावा री
जुगत जोडण खातर
किणी भी काम मे
अळूझ्योडो मैं
आगै खातर
किणी नूवै काम री
तलास मे भटक्तो
मैं

अवै
तू ई बात कद फुरसत लाधै मनै
कै सोचू —
आभै रो रग कैडो है
हवा रो रुख काई है
रुता बदळ रैयी है
या ?

□□

हुनर

मैं अर म्हारो वडो भाई
पूरी कर चूक्या पढाई
जरूरत ही म्हानै नौकरी री
नौकरी—
नत्र-नखरा करती नगटी
कदै-कदास
अखबारा मे दिखती

म्हे दोनू
टँमोटम जाय पूगता
ठावा उथळा देवता
हाकम सा व मुळक र कैवता—
उम्मीद तो है
पण

बरसा ताई चालतो रैयो
पण रो पम्पाळ
लाख मगज कूटी पछै ई
समझ मे कोनी आयो
वा रो बो पण

इणी विच्चै
म्हारो छोटो भाई
पूरी कर चूक्यो पढाई

अेक दिन फेर
म्हारै ई सागै
बिण देख्यो अखबार
दिखी बी नै ई
नव नखरा आळी नगटी नार
म्हे बोल्या—
भाईडा !
अब कै तू ई हुयज्या त्याग
माज लै
अक्कल री धार

वा हरख मे हबोळा खावतो
म्हा दोना री
मूरखता माथ
दात तिडकावतो
होळै सीक बोल्यो—
भाई जी !
म्हारी समझ मे आयाडो है
बी पण रो फण
काल देख्या
मैं पकड ला
बी पण रो फण
मनै
अर म्हारी पढाई न
सौ दफ धिक्कार
जे हासिल नी कर सकू
वा नव नखरा आळी नगटी नार

मैं बोल्यो—
नौकरी थ नै मिलै
या मनै या आनै
अेक ई वात है

वो बोल्यो—
थारो कवणो तो है वाजिब
मैं थानै
ओ आटो
बतावण नै बताय तो दू
पण ?
—रैवण दै भाई !
म्हे दोनू आ धुन सुणाई—
थें जित्तो आटो खायो है
वी सू वत्ता
म्हे लूण खाय चूक्या हा !

म्हारै साम मुळक र
विण इत्तोई कैयो—
खायो हुवैला पण

नव नगरा आळी नगटी नार नै
हासिल करण पूग्या म्हे
हुकम हुयो—
सगळै सैर री
परकमा कर र आवो
पाछा आय र
आख्या देख्यो हाल सुणाओ
जिको ई स्ही हाल बतावैला
ऊचो ओहदो पावैला

टुर्‌या तीनू ई
सागै सागै
पूरी कर परकमा सैर री
वा नै आख्या देख्यो
हाल सुणावण ढूक्या

वडोडा भाई जी बोल्या—
देखो तो सरा
आपण सर मे
मिनख मकोडा री मौन मर रैयो है।
तरसता देख्या है लोगा नै
दाणै दाणै खातर
हरेक चीज री सक्डाई है
नाज सू लेयर
घासलेट तल ताई
कन्टरोल सू मिल
सैर री सग दूकाना माथै
अेक ई ओळी लाधै—
आउट ऑफ स्टॉक।
पण
लारलो दरवाजो खुलो है
इणी खातर
सैर रा लोग
अधारी गुफावा कानी दौड रया है
हुय रैयी है उजाळै री मौत
इण नै बचावण खातर
की तो उपाव करो

—हा-रा
की तो उपाव करो
मैं बोल्यो—
आज रामू रै घरा
चूल्हो कोनी चेत्यो
हुलास भूखो ई गयो है इसकूल
नदू रै घरा
केई दिना सू अकासिया चाल रया है

खरीद कोनी सक्यो दवाई
इणी खातर
मरगी भीखू री लुगाई
भरती वगत
वा कैवे ही—
साची बात कैया
सीखचा कानी लेय जावे लोग
पाच साल मे
अेकर तो हाथ जोडै
पण पछै भूल जाव
जद मिल जावै वोट !
किण-किण रा नाव
और गिणावू
किण किण रो
विक्खो और सुणावू !
सैर रो हाल सुणाया पछ
म्हे दोनू हुयग्या रोवणखाळा
उडीकै हा—
छोटोडो भाई
कैवैला काई ?

छोटोडो भाई देखतो रैयो
म्हानै टुळक-टुळक र
पछै वोल्यो मुळक र—
सुणो हाकम साब !
घापी फाटी है आपरी प्रजा
अ कूड वोलो
आनै देवो सजा
च्यारू कूट लाध्या मनै
राग
रग
अर भोग

सिलसिलो

थारै आग
ऊभा है केई लोग
अ लोग
जिका रैव
आलीसान बगला मे
आरै कमरा मे हुव—
पळपळाट करती रोसणी
मखमली गद्दा
हळकी हळकी सौरम
भरवा डील आळी लुगाया रा
उघाडा डील !

थे ई पळपळाट करती
रोसणी लार भाजो
जद भी
जठ भी मिलै अ
थे मुळक र जोडो हाथ
पण अै मारै
थार मूण्ड माथ लात !

थार लार भी
ऊभा है केई लोग
अ लोग
जिका रवै—

काई ठा
कुण कठै पूगैला
पण ग्रा तो बतावो
ग्रौ सिलसिला
कदई खतम पण हुवैला
या हरमेस चालतो ई रवैला
इणी भात
ग्रागै ऊभा री
ग्रपडता रैवोला टाग
लार ऊभा र
मारता रैवोला लात ।

लोग अकामिया करै
होळी-दियाली ई सुपना कोनी आवै
लापसी अर मीर रा ।

अेक पछै अेक उतरता
डील रा गैणा-गाठा
आळा री ओट मे चिण्योडा
टाबरा रा खाली हुवता गुभाळिया
बिकता वरतण-भाण्डा
अर
बी माथ
सासा री आ जिद
कै जीवणो नी छोडाला
नित नू वी घूमर घालाला
डील रै चौक मे ।

आधी रा वतूळा
सम्पाडा भरती लूवा रा थपेडा
चौफेर पडतो दुकाळ
आदमी अर भूख रै बिच्चाळ
ठण्योडो ओ जुद्ध

अर वी माथै
आदमी रो ओ विस्वास
कै सासा री डोरी
भलाई टूट टूट हुवो
पण
काळ रा जबाडा भागणा है ।

लोग अकासिया करै
होळी दियाली ई सुपना कोनी आवै
लापसी अर सीरै रा ।

अेक पछै अेक उतरता
डील रा गणा-गाठा
आळा री ओट मे चिण्योडा
टाबरा रा खाली हु वता गु भाळिया
बिकता बरतण-भाण्डा
अर
बी माथ
सासा री आ जिद
कै जीवणो नी छोडाला
नित तू बी घूमर घालाला
डील रै चौक मे ।

आंधी रा बतूळा
सम्पाडा भरती लूवा रा थपेडा
चौफेर पडतो दुकाळ
आदमी अर भूख रै बिच्चाळ
ठण्योडो ओ जुद्ध

अर बी माथै
आदमी रो ओ बिस्वास
कै सासा री डोरी
भलाई टूट टूट हुवो
पण
काळ रा जबाडा भागणा है ।

भोर री ललासी मे

नीमड री
पात विहूरा डाळा माथै
बैठ्या पखेरू अणमणा अर उदास

भट्टी री लाटा सो
आकरो तावडो
डाम्बर री सडक माथ
पगा उबराणो ऊभो मैं

म्हार विचारा रै बतूळा मे भवतो
ई देस रो नक्सो
नक्सै मे धधक्ती लाय
भूख री लाय
इन बिन भाजता मिनख
रोवती लुगाया
कळपता टाबर

अर इणी रोळै रप्पै विच्चै
सुणीजतो अेक ठावो सुर—
आवो आवो म्हार सागै आवो
मुट्ठी ताणो ई लाय सू लडो !

काल भोर री ललासी मे
आपणो रगत हुवैला
नू व सूरज रा दरसण करैला
आपाणी औलाद !

□□

तू कैव कै
म्हारी दीठ मामी
गूगळास बापरयाडी है
थारी सलाह है—
मैं ई अेक चस्मो लगाय लू
मू गैछम काचा आळो चस्मो !

म्हारो समझ मे कोनी आव
अडै चस्म सू
काई फायदो
जिकै न लगाया पछै
सही रगा री पिछाण गम जाव
अर हरेक रग
मू गोछम ई निजर आव !

□ □

ऊगतै सूरज री ललासी देख र
क तडको हुय रयो है
—हुवैला

लगायो मन
वा न कोई सरोकार कोनी
सियाळै री ठण्ड सू
उन्हाळै री तपत सू
फागरण चैत री
हवा सू
चौमासै री बिरखा सू
बसन्त पतभड मे
खिलतै झडतै फूला सू
नित रवणियै काटा सू ।

व तटस्थ है
साव तटस्थ
आदमी री जिन्दगाणी अर मौत सू भी
वा रै भा सू
की भी हुवो
पण हुवो जरूर

व तो जाणै
बस अेक ई बात
जो की भी हुवणो है
हुवैला हुवैला हुवला

□□

अर भासा रा भाग
भलाई फूटै
पण चिलम भरण री आदत
- किया टूटै ?

चिलम भरणिया
नूवी-सू-नूवी तम्बाखू
अर ड्राईक्लीन करचोडी
सापया लेयर पूग्या
चिब्बा बैठ्योडा मूण्डा
राळचा सू आली करण ढूक्या
चादी री गोठ बध्योडी चिलमा !
घणी ई कोसीस करी
बा रै धोळा मे
धूड नी पड
पण बा तो
धित नाख राखी ही
धारचा वैठा हा—
नाक कटचा
सास सोरो आवैला !

भासा अर साहित्य रै विकास सारू
बा छापी पोथ्या
अचूम्बो हुयो
आ देखर
कै थारै अलावा
कोई लिखणो ई कोनी जाणै हो
लख-टकियै सस्थान मे हा जिका
लिखणो जाणै ही
बा री तीनू पीढ्या !
पैलै सेट में छपी पोथ्या तीन—

पैंली—वां रै बेटां री
दूजी—बाप री
तीजी—खुद आपरी।

असैधा री सरजण
गारी निकळ्यो
नू वै दम-खम थकाई
साव पोचो हो
वा री निजरा में
अर गम्भीर सरजण रै लेवल सागै
समूण्डै आया—
संघ पिछाण आळा रा चुटकुला ई
अर चुटकुला ई अैडा
जिका थान म्हानै तो याद हा ई
याद हा—
गळी गुवाड र गण्डका तकात नै।

रामराज है
गोधा नै कुण बरज
भलाई बाड चरो
भलाई खेत
सगळा खातर है
हवा पाणी अर रेत
परोटणियो चाइजै।

इनाम इकराम न्यारा मिलू हा
स्सो ई खुद तो लेवै किया
पण मूण्डै आगै
सवाल सागी हो—
दूजा नै ई देवा किया ?

चिलम भरणिया चेत-आया

भेज चपड़ासी

हाथोहाथ बा नै बुलवाया

—अरे डफोळा !

नींद में सूता हो काइ

ई बँवती गगा मे

हाथ कोनी धोवो

म्हारै थकाई ?

म्हारै मरया पछै

नी हुवैला

थारी रत्ती भर ई गिनार

अेक दो पोथड्या

कर लावो

हफ्त प दर दिना मे त्यार

बरसा सू

थे म्हानै सेवो ।

अठ अवार आपणी चालै

माजन सारू

की तो भूर लेवो !

हड़बड अर हाक मे

रातू रात छपी पोथ्या

गळतिया रो रसो जिम्मो

कम्पोजीटरा

अर प्रूफ रीडरा माथै

गळन लिरयोड न

कुण जाचै ?

जाचण में बगत लागै

अर बगत—

असली बगत

आयो सिर माथ

आठू ई पौर
इनाम इकराम
अर उमराद रा घण्टा बाज

अेलाना विच्च
हुया अेर और अेनान
साहित्यकार चाव ता
भेज सक है
अपणी पोथी महान्
जिण नै म्हे देवाला इनाम
इनाम लियां पछै
ना पायी कठै सू ई छपला कानी
जे चावा, म्हे छापा
ठीक है थे म्हारा हो
छाप देवाला
पण ध्यान राख्या
म्हारी छाप्योडी विकैला कोनी
तिकडमा अर वाई वीरा रै जोर सू
जाचा असल जचग्यो
लख-टकियै सम्मान र
साही फरमान री खोज
बगत सू पली काढण खातर
जत्थो रो जत्थो दुरग्यो !

रसै ई
अेक दूज सू सावचेत
इण त्यारी सागं
मौको मिलताई
घाला आख्या में रेत

पुरस्कार घोसणा सू पैली
घीगडनाथ करया अेलान—

भायला !
        कान खोल र सुण
पुरस्कार रो हक्दार
        म्हारे अलावा कुण ?
खाली म्हारी ई पोथी
है पुरस्कार जोगी

अर वो पुरस्कार लेय पड्यो !

अणछपी पोथी महान् खातर
इनाम री तजवीज हुवी
केइया रा कान खुस र हाथ मे आया
केइया मे मची राळा हुकी
पण बन्द मुट्ठी रो भेद कुण जाणै
वगत बलवान
स्याणा लोग सदा वगत नै पिछाणै ?

नीज् प्रकासण सारू ई
देवणी ही की इमदाद
इण वगत भी
चेतै आया
व ई पूछ हिलाऊ याद

वादा री गाठ बधी
निमम चेताय र
धामना धामना
धूब में उछाळया आगर—
मोको है मोको है
घर र पइसडा सू
            पोथडी छापलो

घर में गुणजाइस नी है ता
माथ चोटी कर र ई छापलो
फेर मू छ्या मे मुळक र बोल्या—
म्हे तो
सगळा रै ई काम ग्रावा
ऊरमा सारू
सैग जणा न
की न की दिरावा
हा केई जाळी झरोखा
देखता रैया सिंघ
ग्रर पाच-पाच सौ री नौळया रै
लमूटगी लोकडया

हारी मादगी खातर
खुल्योडा हा न्यारा खाता
इ मैदान मे लाध्या
वैं ई रण्डवा
वैं ई सागी नाता

सम्मेलना खातर भी हा
रिपिया दो च्यार हजार
बीनै चूटण खातर लाधी
वैं ई मूरत्या त्यार
वेजा भीड हुई
ताळया खूब वजाई
कवितावा सुणावण खातर आया
वा रै साढ री भूवा रा जवाई

छट्ठे छमासे जगती बठै ग्रेक जोत
जिण मे डुवती रोसणी री परतख मौत।

गान समझ र लिखगिया
जिलमा नी भरगिया
जद वदई मिनता
न मळक र पूछता—
थ भी की
(गुडी कुचरण रा साग)
निग्या करा हा नी ?
म्हारी मण्डळी मे
आया करो भाई !

(हा, आजाना
बगत आया जनावाला !)

कुण समझ सकै
आ लोगा रा वौपार
अ सावळ देख
नैन अर तन री धार

आ रै मना मे मल
अ पीव
बर्ड सू पली तल

आ ग नवखण देगर
चैन आवै
ब नुगाया
जिक्या आपर
खसम र नाम भायलै न
पैली तो
धरम भाई बणावै

मिनख वास्तै

आभ नै हाल
थिर रवणो है
खासा ताळ
इणीज विध
[बिना छात र घरा में रवणिया खातर ।]

धरती नै हाल
घूमणो है सूरज रै चौफेर
खासा ताळ
इणीज विध
[मिनख न गतिसील राखण सारु ।]

आदमी नै हाल
बहस में अळूझ्या रवणो है
खासा ताल
इणीज विध
[झूड अर साच न परखण वास्त ।]

□□

पद पइस अर सम्मान री
तजवीज जद दिरौ दुकती
वी जगत श्रा तकात कर दिखावै
मायड भासा कथै जिरा न
वी रै गफ्फी घान र पड जावै !

श्राज
इतिहासकार श्रा रा जर खरीद गुलाम है
इण खातर
श्रै इतिहास तो बणला ई
पण श्रा नै श्राज
इत्तो क तो
मैं ई पूछू
थे ई पूछो—
श्रा तो बतावो
कडोक लागै
जद मायड रो
घाघरो सू घो ?

□□

आदमी सू सीखो

बी दिन
सडक माथै   अेक दार्शनिक
कुत्तै न समझावण लाग्यो—
ओ भाया !
तू मिनख बणणो सीख
थारी आ वफादारी
की काम गी कोनी
जे तू   अबै भी वफादार रैयो तो
दुख पावला
जे   जीवणो चावै सुख सू
तो की सीख   मिनख सू

जिकी थाळी में खावै
बी में ई कर छेरला
जिका थारी   साळ सम्भाळ कर
वा री फीच्या में दै डाग
जिका रो   दूध चूंघ्यो थ
वा र पुटपडा   दै फटीड
सैमूण्ड मुळक
पीठ लार
भाण्ड बानै   थूक जैर !

जे लागै गळै
मार छुरी पीठ में
मौको लाग हाथ तो   दूप गळो
अर   बण्यो फिर
दूध रो धोयो !   □□

ऐ काई लेवोला

मिनख
अर मिनख री मनग्यावा नै
इत्ती पागळी किया समभ राखी है
क जद जी चावै
सामी राख देवो
चक बुक—
लाल
पीळी
या धोळी

जे ये
हरेक आदमी न
बिकाऊ जि स समभो हा तो
बोलो आज—
ऐ काई लेवीला
चैक बुक ब द करण रो
अठै सू
चुपचाप टुरण रो ?

□□

क दूजो त्यार हुय जावै
जोडा तो काई जोडा
मासा तकात अडाण पडी
जुगा रा जुग बीत्या !

नाक राखण खातर
बडेरा गळा दू पग्या
दिन रात
खोदया ग्वाडा फावडा सू
धोबा सू कीकर बूरीजै
ब्याज रो ब्याज चुकावा
जुगा रा जुग बीत्या !

कदई तोडा भाठा
कदई चुगा कोयला
कदई ढोवा रेत
टावया पडगी डील माथै
मल्हम लगावै तो
लगाव कुण
छाला में चिर्क है खून
जुगा रा जुग बीत्या !

पण सुणो
ग्रो दब्योडो ग्रादमी
ग्रब जाग-ग्या ऽऽ

जी चावै जित्ता
परकोटा बणाय ला
हवा तो खुली रवैला

जुगा रा जुग बीत्या

जठै हा
बठै ई ऊभा हा
हाल ताईं
जुगा रा जुग बीत्या !

बा ई घर
बिना छात रो
र ई भीता
अगलीपी
चूनै रो पलस्तर कठ
गिरै है ई टा सू रेत
जुगा रा जुग बीत्या !

बो ई चूल्हो
ई टा र महारै ऊभो रसोडो
ब ई पीम्पा
खाली अध-खाली
भरयै पीम्पा रा सुपना कठै
खाली पडी पाणी री कूडचा
जुगा रा जुग बीत्या !

हालत आ है
पेट री दाभ कोनी बुझै
अेक खाडो बूरीज कोनी

काई देखू

काई देखू ?
थारी टोपी रो
धोळो रग देखू
कै देखू —
भूख सू काळो पडतो
म्हारो डील
कम हुवतो खून
अवार टूटू
अवार टूटू करती सासा
बोलो, काई देखू ?

काइ देखू ?
वागदा माथै ऊगती
अै फसला देखू
क देखू —
घरा मे पड्या
नाज रा खाली पीम्पा
तळो दिखावती हाड्या
अवार बुझू
अवार बुझू करती आच
बोलो, काई देखू ?

काई देखू ?
चन्दरमा री परकमा करता
विमाण देखू
कै देखू —

भींता री रेत
    अबै नी गिरला
थार झूठै वही खाता न
    लाम्पो लगावाला
ब्याज रो ब्याज तो
    वसूल्यो घणो ई
पण अबै
मूळ रा फिक्र करो!

ना देखो म्हारै छाला नै
डील माथ पडी
    टाक्या नै
टाक्या में चिक्त खून नै!

चावै जित्ता पडै छाला
चाव जित्ती पडटाक्या
टाक्या में भलई चिक खून
अबै मुट्ठी ताण ली है!
(अर हवा खुली है!)

भूख सू मरता
बीमारी सू तडफता आदमी
दवा री जागा लागती
कोरै पाणी री सूइया
बोलो, काई देखू ?

काई देखू ?
थारो निखरतो रग
अर बधती चरबी देखू
कै देखू —
डगमगावती सासा री
लाठी थाम्या
मौत सू बाथेडो करत
आदम्या रो जुलस
जिका हर मोल माथै
जीवणो चाव
बोलो, काई देखू ?

काई देखू ?
थारी बधती सुविधावा
अर ऊची उठती हवेल्या देखू
क देखू —
बिना छात रा घर
उठती भीता नै नाखता
था रा ऐ बुलडोजर
बोलो, काई देखू ?

काई देखू ?
थारी बाता सुणू

कोयलो इत्तो काळो कोनी हुवै

थे घडी घडी म्हारो अपमाण ना करो
अपमाण सैवण री भी अेक हद हुया करै है—
थे आ ना भूलो
थारै इण थप्पड रो उथळो
अबै मैं पण थप्पड सू देवू ला
(डाव गाल माथै थप्पड खाय र
जीवणो गाल थारै सामै मेल र
मैं गाधी बणणो कोनी चावू !)

था रो टेरीकॉटन रो सूट
बाटा रा चमचमाट करता जूता
रगीन टाई अर चस्मो
ई जुग री फसन हुवैला
पण लटठै डोवटी रो चोळो अर पजामो
घसीज्योडै तळा आळी चप्पल
मैं भी परया करू हू
(मैं नागो उघाडो कोनी !)

चम्बर मे थारी कुर्सी माथै घूम पखो
घण्टडी बजावता ई
चपडासी हाजर हुव
पण सुणो—
मैं भी च्यार टागा आळी कुर्सी माथै बैठचो हू
(मैं अधर मे कोनी लटकू !)

थ ह्रखीजता हुवाला
क था र दस्तखता सू
म्हारी तिणखा रो बिल पास हुवै
पण सुणो—
तीस दिना ताइ
खून पसीनो अेक करचा पछ
म्हारै आगणै मे घूमर घाल
पहली तारीख रो सुग
(कूटा विडद बखाण बख्शीस लेवणियो
चारण-भाट कोनी मैं ।)

थे हीरा खरा
ग्रेफाइट खरा
पण मैं भी 'कावन ग्रुप' रो हूँ
सुणो—
मैं कायलो हू
अर याद राखो
कोई कायलो इत्तो काळो कोनी हुवै
क जग्या ई लाल नी हुव ।

□□

कुण अडाणो राखै

आधी रा ग्रै वतूळा
धरती ग्रर ग्राभै रै ग्रीचाळै ई नी
देही रै माय भी है।
ग्रादमी करै तो काई करै
जठ ग्रापाधापी ग्रर दोगाचीती ई चालै
दिन रात
ग्रादमी ग्रर ग्रादमी रै बीचाळै वापरती
ग्रा ठण्ड
भीता र रसारै ऊभी हुवती भीता
सुक्डीजता ग्रागणा
चूल्है रै माय सू निकळता चूल्हा
सासा री चीर फाड
ग्रस्पताळ मे ई नी
घग में भी हुव।
लप दाणा खातर
जठीनै देखो बठीनै कतारा
तर तर लम्बी हुवती क्तारा
रोजगार दफ्तर र ग्रोळ दोळै
ग्रदीठ ग्रासावा सू बध्यो नू वो रगत
ग्रेडघा रगडतो फिरै।

टावरा रो बधारो रोक्ण सारू
चेपीज रैया है पोस्टर—
थोडा टाबर घणो सुख
घणा टावर घणो दुख

मुफ्त वाटीजै—
निरोध
कण्डोम
अर भाग री गोळ्यां
पुरस्कार—
नसबन्दी करावणिया
अर लूप लगावणिया नै

धरती माथै
मिनख रै दुखां री जड
पेट
ओ पापी पेट
खाली पेट
धावो
आपां चाला अर सोधां
कोई साहूकार
जिको अडाणै राखै पेट !

□□

चळू भर हेत

ओ म्हारा खासमखास भायला !
मैं थनै काइ कैय र बुलावू ?

बी दिन
म्हारै गळै में
फूल माळावा घालती बेळा
थें कोसास करी ही
म्हारो गळा दूपग री
जे मन हुवतो लखाव
क थारा नख बधग्या है
तो मैं ई सोध नेवता मारग
म्हारी हिफाजत रो !

बी दिन
म्हार नाव री गूंज
हवा में सुण र
म्हारी पीठ थपथपावती बेळा
थें कोसीस करी ही
म्हारी पीठ में छुरा मारण री
जे मन हुवतो लखाव
कै थारै हिवड म
बाढ आयोडी है घिरणा री
तो मैं ई तलास लेवतो
चळू भर हेत !

वो दिन
म्हारी रोटी सिक्ती देख र
हाय तपावती वेळा
थें कोसीस करी ही
म्हार चूल्है री लकडचा माथै
पाणी नाखण री
जे मनै हुवतो लखाव
क तू वरफ रो सौदागर है
तो मैं ई तलास लेवतो
मुट्ठी भर गरमास !

ओ म्हारा खासमखास भायला !
मैं थन काइ कैय र बुलावू ?

□□

फूकड़-कथा

काइ फरक पड
जे किणी वगत
बात हुवै बरसा पुराणी
हा तो सुणो सुणो
अेक हो राजा
अेक ही राणी
राणी आपरी ऐश मे मस्त
बी रै कानी सू
राजाजी रै राज रा सूरज ऊगा
भलाइ हुवो अस्त

पण राजाजी बजता
धरती रा धणी अन्नदाता
दिवला री तो औकात काइ
सौ सूरज लेय र निकळा तो ई
मिल कोनी बारी जोड रा
इतिहास मे मिनख दूजा
डण्ड अर डाग र जोर सू
ब करवावता आपरी पूजा
पाळ राख्या हा केई
गोला गण्डक गुमाश्ता
ठाकर कोटवाळ
बिगडती हालत न जिका राख सभाळ
गाव मे
जे लागी हुव लाय

अर कोमा ताइ नी रैया हुवै
मासा रा अैनाण
तो अै टुकडखोर खबर देवै—
गानर पड्या करता चूनकाड्या
सूखी घास रा ढिगलो मिळगग्यो
दारू रा गुटको लेय र
ठाकर इमदाद भिजवावै
—टावरा रै हाथा तूळ्या ना दिया करो!
नाता मार मार गोला गण्डक
गावरा रै माइता नै समझाव
इमदाद री रकम सू
पछै गोठ उनावै !

अन्नदाता नै कोड
पाळै भात-भात रा मृग-पखेरू
देख सेन तीतरा री लडाई गे
सुणै टेर सुग्रा री—
राधेश्याम ! सीताराम !
गळी मे जे गण्डक भुसै ता
कर बन्दूक सू काम तमाम !

मृगा री रूपाळी आनर
अब आदमी हो गया
जिवा जागता मृगा री भामा
जो नी कयता गग
नां पूगावतो अन्नदाता तक
अन्नदाता रै जची
पाळ्या जाय कूकरा
कूकरा पाळ्या हुवैला काम तगडो
रूद जी गावला
या बनै निराप थांग
गरनाग रूप मा मदरा !

लोग आवैला जोडया हाथ
—अबार तो है आधी रात
मुळक र कैवू ला—
थे सफा ठोठ
आ है भेद री बात
आपणै अठै रा कानून-कायदा और
म्हारो कैवणो है
जे अठ सुख सू रवणो है
तो मन मगज सू निकाळ दो
क सूरज ऊग्या हुवै भोर !

अनदाता रो हुकम हुवताई
कूण्डी पिटगी च्यारू मेर
कूण्डी पिट्या पछै
लागती क्यारी देर
च्यार कूकडा राजाजी री सेवा मे
रवण लाग्या चौइसू घण्टा त्यार
राजाजी रो हुकम हुवताई
आधी रात नै देव बाग
प्रजा कव—
भोर हुयगी
ओ अंधारो तो इया ई है
जिका नईं मानै भोर
वा न मनवाव
गुमास्ता दिखाय टाग !
—डफोळा !
कैवो हुयगी भार
म्हानै सुणीजै कूकडा री बाग

हवा में उडण लाग्या
बगत रा सूखा पत्ता

अब कूकडा न लखावण लाग्यो
ओ जमारो दोरो
(नू वा नू वा आया जद लाग्यो सोरो !)
सोचण लाग्या काईं करा
माय रा माय
कित्ताक दिन मरा ?
गोला गण्डक गुमास्ता
ठाकर कोटवाळ बरसा सू हा बठै
बोल्या—सुणो, थार भल खातर कवा
म्हारो कयो करघा, जे था रै जच
अठै था नै स्सा छूट है
टाळ-टाळ र
नूवै निपजतै खेता में चरो
और मरजी आवै जिया करो
पण सुणो
अन्नदाता रै खिलाफ
जबान खोलण सू डरो !

कूकडा देखता
अन्नदाता रै महल में
अपारो हुयतांइ ऊधम हुवण लाग
काची-बयठी गामा
लाज बचावण खातर
इन्न बिन्नै भाग
दूध दन्त री रखाणगो ही
जिणा री रगां में
जिका थोर बाळ्डी बांभड़ी पन्नी रो

निपजा सकता हा मोती
बा नै उळझाय देवता वठै
दारू री धार में
अम्मल री मनवार में।
जुलम री जडा खोदण री
ताकत ही जिका में
बा न नखवाय दिया
भरखा चोकरण डील री
तिसळवी घाट्या में।

कूकडा देखता
राजाजी री नित नू वी कुबाण
कूकडा नै लखावतो—
बै जीवै तो है
पण बा रै माय
जलम रैयो है मसाण
जे इणी भात
तर-तर बधतो रैयो
म्हार माय ओ मसाण
इतिहास हुय जावैला काळा
धरती माथ हुवला
मिनखा रो हाण
आयो जग थूकला
कोई नी चूकला

कूकडा करचो विचार
आपणी बाग सू हुवै भोर
आपा अन्नदाता नै समझावा
धरती रै धणी नै
धरती री हालत दिखावा
नई मानै तो वा री मरजी

आपा तो छोडा
इण कादै मे कळीजणो
क्या मूं सहीजै
नित माय रो माय सीभणो !

रात काळी अंधार घुप्प
चौफेर पसरयोड़ी ही चुप्प
कूकड़ा हुया भेळा
छेडी वतळ
बाता ई बाता मे
मचगी खळबळ
—आ कयारी कलबल है
राजाजी री नींद टूटी
—अब घड़ी सोवण दे कोनी नाम पीटया
आ कय राणो रूठी
राजाजी मृग-भासा जाणणियै नै बुलवाया
अबोलो ऊभाय बीनै
कूकड़ा री कलबल रो मजमो दिखायो

वा री बाता सुण्या पछै
मृग भासा जाणणिया हुयो हक-बक
सोचण लाग्यो—अबै काई करूं ?
साच कया कूकड़ा मरैला
कूड़ कैयां
अन्नदाता मनै नीं माफ करला
सांच कैयां आं री मौत !
कूड़ कैयां म्हारी मौत !

आं री आ रंग देख
[illegible] राजाजी—

ग्रा न जलम दय
ग्रा घरती निहाल हुई
ग्रा री कृपा तळ पळा जिकी माम
मालामाल हुई
ग्रनदाता री दिलदरियाई देखा
कठई कीडो नीं मिल जिका न
ग्रठ वा नै नाग लाग देवै
ग्रापा काती ई देखो नी
कित्ता सुख है ग्रठ
नापड रा टूकडा रो काई भविष्य
जिका पडघा गळघा में बाग देवै !
मिल कोनी वगत मर दाणा
कुत्ता रा न्यारो डर रैवै !

ग्रठ तो
वकरी ग्रर सिंघ
ग्रेक ई घाट पाणी पीवै
राजाजी रै राज मे
कीडी सू लेय र हाथी ताई
मस सुख सू जीव !

रीस सू भरीजग्या
कुंवो राजाजी रै जी रो
चेहरो हुयग्या लाल वम
जाण वळता गोळा
ग्रनदाता रा हुकम हुयो—
पेंल ग्रवक री नस मराडो
टूवें रा आट-ग्राट माणा-गोटा
नीजै री ग्रम्माई रा टूट माम
गोमा घाऊ गम्मा सू पोगो !

चाय फूरड न बुलवाय र
गरबा घणाई लाड दुलार
आपर गळ सू उतार
परायो बी नै
    नवलखो हार
सगळा सू ऊचा आह्दो देय
करी घोषणा—
ओ वगत सरै
    अठी वगत
    म्हारा सगळा अधिकार !

आपा की कथा

इणी जमी ऊपर
आभ तळ
आपा दोनू साग-मागै
पीटीजता रैया
आधी
बिरखा
अर तावड़ै सू

मनै लाधगी भासा
म्हार दरद खातर
मैं रम्मण लाग्यो—
आखरा सू
लिखण लाग्यो—
कवितावा
अर म्हारा भायला!
आधी
बिरखा
अर तावड़ री मार सू
तू सीखग्यो
आगळी माटी कर र
पी जावण री कला!

आज तू मत भगै
आंधी
बिरखा
अर तावड़ै सू

चीर मक—
अंधार रा काळा पडदा
वदळ मक—
हवा रा रूख

आज थारा रुता है मन—
मैं ई थारै माग आवू

तू कैव—
कारी कविताबा सू
काई पार पडला
तू आ
म्हारा व्हाला बा धव !
तू आ
आपा की करा
आदमी र जायज हका खातर
लडा मरा
की न-की तो करा !
□□

जागती मसाल

लै आव भायला
तू झाल
आ जागती मसाल

घडी दो घडी री है बात
कट जावैला काळी रात
ऊगैला नूवो सूरज
आभै मे गिण्डैला गुनान
पण तद ताइ
तू झाल
आ जागती मसाल !

आज पग-पग माथै भीत
सुग-माग रैयी चीथ
टूटैला रुो भीता
मिलाला बायां में बाथ घाल
पण तद ताई
तू झाल
आ जागती मसाल !

बेनी सगी रुम रूस्या है
सुपना सुगां री टूट्या है
पेर सजैना सुपना
टूटैला म्हो जजाळ !
पण तद ताई
तू झाल
आ जागती मसाल !

□□

आखी रात

सुणँ सरणाटो
आखी रात कोई !

हेठँ धरती
ऊपर आभो
पण नींद नी आवँ
कळपँ हिवडो
टूटँ तनडो
पीड कुण मिटावँ
फोरँ पसवाडो
आखी रात कोई !

सासा चालँ
मजला दीसँ
डगमगावँ पग
म्हारा इरादा
खरीदणा चावँ
छळछद सूं जग
भुगतँ नरकवाडो
आखी रात कोई !

सुणँ सरणाटो
आखी रात कोई !

□□

अरे ओ स्याणा !

मिनख अर मिनख रैं बिचाळै
क्यू बापरगी थोथ
अरे म्रो स्याणा !
की सोच

रातोरात अठै
त्यार करीजै
मूडा खाता
अर बदळीजै फाइला
क्यू कैवा
किण नै कैवा
आपा तो हा
गांधी रा बान्दरा
देस रैं सौदागरां रा
किण विध उघड़ैला पोत
अरे म्रो स्याणा !
की सोच

जाणा हां
पतल बात है गुणबू
कांई हुयो
जे रग भांत भांत रा
जिणन हां
जिणनां रग जीवां
फेर बू
भाणां खिच्च पांतरा

आभ कानी उठतोडा पग
क्यू खावै है गोच
अरे ओ स्याणा !
की सोच

दिन धोळै
हस अधारो
डील सू उतर
सरम रा चादरा
धरती री कोख मे
बोइज्या बीज अडा
ऊबड खाबड हुयग्या
रस्ता पाधरा
हेत भरचै हिवडा रो
कुण लीलग्यो लोच
अरे ओ स्याणा !
की सोच

मिनख अर मिनख रै बिचाळ
क्यू वापरगी थोथ
अरे ओ स्याणा !
की सोच

□□

अगन-कथा

देखो-देखो
वठीनै देखो
वो ऊभो अगनीदास
सीरा री तलास मे
ऊभो है अगनीदास

स्सै सीरा
जद ताई नी हुवैला भेळा
थानै अठैई लाधैला अगनीदास

वी दिन
धरती अर आभै रै विच्चै
अमूजती सासा
अर अभावा रै धादै मे
पळीजता मिनखा रै
भविष्य बाबत सोचै हा
अगनीदास

थांरी सुगनी सास
जिणो वा हूय मरं हो
वी प्रान सू
मरं हो अगनीदास

आ सावर—
गाय र भैस भलाई की मती लागो
पण मिनख र
मिनख जरूर ई की लाग है

मिनख र जायज हक खातर
ता-उमर लडणो म्हारो फरज है
आ साच हो अगनीदास
इत्तै मे ई
केई जणा आया
अगनीदास र काना कन ऊभ र
बोल्या—ह हो !
अगनीदास र मूण्ड सू निकळचो—ह !

वीर ध्यान रा हुया लीरा-लीरा
अचाणचूकै सुर सू
जिया हुव
सरणाटो लीरा लीरा !

—म्हे थार सागै जूझाला
थारै हाथ में लेवो
म्हारो हाथ

वै बोल्या
अर बोल्या ई गया—
इत्ती बडी दुनिया है
मिनख रै दुख-दरद री औखध नी लाधै
आ किया हुय सकै ?

हरख र सागर मैं
हबोळा खावण लाग्यो
अगनीदास रा मन—
कबीर अलावा भी है अठै
      मिनख रा हेताळू

इणी भात
जे भेळा हुँवता रेय
    ऐ मीरा
मीरा मे रळना रैया
    अ मीरा
तो है भरोसो मनै
डाम्फर वाजै
या चालै सू साडा भरती आघी
आ मीरा री ओग
        थिर रैवैला

वाजै-वाजै
      ओर वधैला ओग
काम करैला औखध
      मिटैला रोग !

अगनीदास निकळ्यो
मीरा भेळा करण खातर
बार मागै—
घर सूना घर मजना !
च्यार पावडा
चाल्या व साग-सागै
पेर खोया—
पग री मिनखा पागै
वो मारग पकडो
थे जनम जात रागी
थारै दुखा री औखध
        मौत !

अगनीदास !
तू ओ धधो छोड
खुद रै सुख खातर
जुगत जोड

सोचण लाग्यो अगनीदास—
अब क्यारो भौड
आयग्या औं सग सागी ठौड
वा ई लोगा मे
बार ई सागै
जिका री दौड
जलम सू मरण ताई
रोटी सू लुगाई र डील ताई

कूतण लाग्यो खुद नैं
खुद रै मारग नैं
है इण मे खामी काई
कै जिको ई मिल
मुळक र कव
भोळो है लाई !
दुनियादारी सीख नी सक्यो हाल ताईं

विदा हुँवती बेळा
रामा-स्यामा करी अर बोल्या—
अरे डफोळ अगनीदास !
जे म्हार सागै चालैला
सुख पावैला

ई मारग मैं
पग पग पर अबखाई
अठै नी बगतसर रोटी
    जरूरत मर लुगाई
वर कोई अैडो धधो
जिण सू वधै
        रूपली पल्लै
रूपली—
जिकी जगळ मे ई चलै !
अगनीदास माख्यो निसकारो
                —रूपली !
म्हारो सत् काई डिगावैला
                आ रूपली !

रूपली लेयगी वां नै धीस र
अर अेकलो रैयग्यो
                अगनीदास
वी र सागै ही
        मीरा री बाई तलाग
अगनीदास रा वै भायला
छट्ठै छमासै आवता
नू वी-जूनी खबरा लावता

—ए आजकाळ मैं
चमोदो साद हू
रामदे पाली रो लुगाई रो ब्लाउज
पर वमपटर गाय री
लुगाई रो पटोरो सराग
म्हारो इ दूकान नवै
दारै म्हारा मैं
कुटा भाडला हुव ता

वय दीज मन
भलो भाया अगनीदास ।

वै आजकाळ में
उघाड़ै डील आळी लुगाया रा
रगीन फोटू आपू
मर रा जवान छोरा छोरी
लण लगाया ऊभा रैव—
म्हानै देवो म्हानै देवा
अर आइज माग आवै
देस र दूज हलका सू
म्पनी रो डिग
म्हारै गोडा ताई आयग्यो है
जे थन
यदई जरूरत हुवै नो बारघै
मुण लाडी अगनीदास ।

व आजकाळै में
केई मिनख पाळया है
वै म्हार ई नाव सू वेच
चोखी
रूपी
अर छोटा लानी
गुणकूलार कागसिया अर बेसा
दाफाग ई जगनी रैवै
पळपळाट करनी टपूक लाइटा
आ दूधाळा मे
धीर रो हरेक
चीरणो अर फटरा केहरा
म्हारी डूगर र धार में
मूनडो देग

जे किणी तिवार टाकडै
थनै चाइजै अतर रो फव्वो
आपणी दूकान दूवये अगनीदास !

कै आजकाळै मैं
अमनै री टोपी मैमनै
अर मैमनै री टोपी अमनै नै पैरावू
लोगा नै
दूजां री टोप्या पैरण रो
बेजाई सौख है
आ टोप्या मे
जे थनै ई
कोई टोपी दाय आयगी हूवै तो कैयै
मैं भायला नै
भूनू कोनी अगनीदास !

कै आजकाळै मैं
लोगां री हजामत
करणी सरू करी है
अठै भला भला आवै
अर टाट मूंडाय
तू थारो गुण र
आम्ब्यां लास करणियां र
गाला रै हाथ लगाऊं मैं
मनचाया पइसा लेवूं
गालिब करनी अगत
कर्ड़ई करई
टोटो म्हारो नाम
राम भरोसा गाम
अदगू थाणा
दर्शन करायना

मैं थार
    ठोलो नी मारू ला अगनीदास !

क आजकाळै मैं
भासा रै जरियै भरम फैलावण रो
        कारोबार न्यारो खोल्यो है
उघाडी लुगाया रै डील रा
फोटू छापण आळी पत्रिकावा तो
म्हारी देख रेख मे निकळचा ई करती ही
पण जिका न
बिकाऊ नी हुवण रो गुमरेज हा
वा तकात रो
        दिमाग
मैं खरीद मेल्या है
अबै व
म्हारै कैयै मुजब ई
सोच
जोलै
अर लिख
जे थनै ई
थार खीरा री वात
बरफ रै टुकडा मे लपेट र
कवणी हुव तो
        मनै कयै
बीस तीस पाना अर
तू कव तो पूरा अक
मैं थारै खातर
    रिजव करवाय दू अगनीदास !

इणी वतळ विच्चै
वै सग सागै ई वोल्या—

म्हे हुयग्या हा मालममाल
उदास हुय
सोचण लाग्यो अगनीदास
इ दुनिया रो
हुवैला काई हाल ?
अ चिडी रा गुलाम
दिन दिन वध्या जावै
नचीता वैठा है
वन्द कमरा मे
टयूव लाइट रै चानणै नै
सूरज रो उजाळो समभै
आनै किया समभावू
अधारो दडूवतो आव !

दटूवतो आवै
अंधारो
अर आदमी री सासा माथै
मार वध्या जावै
वध्यो जावै चौफेर
अमूजो
अर धोय !

टुरण सू पैली
वे बोल्या—
सुण अगनीदास
[illegible] उगै
वो न कोनी लिख उजास
जे सू आवै
उजास
आ [illegible]
[illegible]

ग्रा तलाम
थन भटकावला
भरमावला
जे बस चाल्यो ई रो तो
थनै मिटावैला
ग्रर जद
तू ई मिट जावैला
तो ग्ररे डफोळ !
वो उजास
(जे लाधग्यो तो)
थारै किमै काम ग्रावैला ?

ग्रगनीदास री ग्रारया मे
ग्रगनो पळको
वो करण ढ्वयो सवाल—
जे मैं ग्रेकलो ई जीवू
ई रो मुतलव
ग्रो ता कोनी
क मग जीवै
भरवा डील ग्राळी
लुगाया सागै
मखमली गिद्दा माथ सूव
ग्रर फेर
जीवणो इत्तो ई तो कोनी
कै जद भी जरूरत हुव
मिल जाव—
चीकणी रोटी
ताजी वोटी !

—ग्रो गलो है !

इ नै समभावरणा दारो
थोडी ठोसरा श्रौर खावण दो
मत्तैई अक्कल श्राय जावैला
म्हे ता हरमेस
थारै ई भलै खातर
अरथाऊ वाता कवा
पण गैर
याद राखै
थन समभावण खातर
म्हे भळै श्रावाळा

तू म्हारो
भायलो है नी अगनीदास ?
वा रै गया पछै
ता उमर
छेनी साम ताई
मिनखा री मुगती सारू
जूभरण री सौगन लिया
श्रापरै जुद्ध मे
लाग्यो रयो अगनीदास

थैं चोरू ला अथारै नै
श्रो अथारो
जिरो निगळ्या बैठ्यो है
उजाग

उजाग
थैं जिण मायै हुा है
मिनख जात रो

उजाग
थ जिकी हेमाणी है
मिनख जात री

उजाग
थ जिण मे पोरष है
मिनख र मन्छ मोती रा

सगळै जगत रो जीवण है
ओ उजास
इण रै खातर
मैं लड़ू ला
छेली सास ताई —
बोल्यो अगनीदास !

□□